UGC Approved Journal
Sr. No. 64310

ISSN 2319-8648

Indexed (IIJIF)

Impact Factor - 2.143

Current Global Reviewer

UGC Approved International Refereed Research Journal Registered & Recognized
Higher Education For All Subjects & All Languages

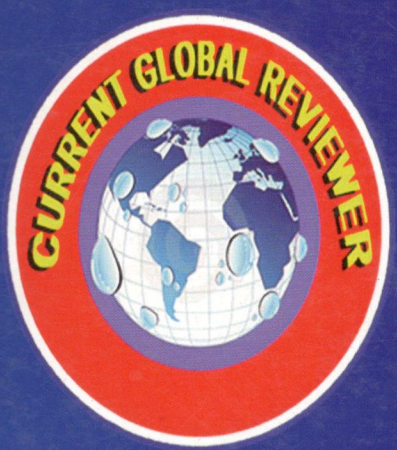

Editor in Chief
Mr.Arun B. Godam

www.rjournals.co.in

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Half Yearly Issue IVol II, May. 2017	UGC Approved Sr. No. 64310	ISSN : 2319 - 8648 Impact Factor : 2.143

Current Global Reviewer

UGC Approved International Research
Refereed Multidiciplanary Journal

Editor In ChiefSpecial Editor

Mr. Arun B. Godam | ***Prof. JadhavBaburao B.***

Dept. of Political Sci.
BapusahebEkambekarMahavidalaya , Udgir

ISSUE IX Volume II (Half Yearly) May. To Oct . 2017

Editorial Office Address :

Khadgaon Road, Kapil Nagar,
Latur, Dist. Latur 413512
(M.S.) India

Contact- 8149668999

Email-
hitechresearch11@gmail.com

Publisher
Shaury Publication
Kapil Nagar, Latur
Contact- 8149668999

EXECUTIVE EDITORS

Dr. ChittaRanjan Panda
P.G. Deptt. OfOdia
Shailabala Women's
Autonomous College
Cuttack – (Orissa)

B.J. Hirve
Dept. of botany
VasantMahavidyalaya,
Kaij, Dist. Beed. (M.S.)

Dr. U.T. Gaikwad
Dept. of Geography,
Smt. S. D. M. College
Latur, Dist. Latur (M.S.)

Dr. PrainDiddeshwarShete
Dept. of Zoology,
Maharashtra
UdaygiriMahavidyalaya,
Udgir,
Dist. Latur

MaimanatJahanAra
Head, Dept of Political Science,
Sir Sayyed College,
Aurangabad, Dist. Aurangabad

DrU.V.Panchal
H.O.D, Dept of Commerce,
Deogiri College,
Aurangabad, Dist.Aurangabad

Dr M.U. Yusuf
Dept of Commerce,
Sir Sayyed College,
Auranbadad, Dist. Aurangabad

Pro. S.B. Karande
Dept. of Economics,
ShriBhausahebVartak College,
Borivali (W), Dist. Mumbai.

Dr. Hanumant Mane
R.Guide& Head,
Dept. of Marathi,
Shivchatrapati College,
Kalam, Dist. Osmanabad(M.S.)

Dr. N.J. Waghmare
Research Guide & Head,
Dept. of Pali,
Govt. Sanatketar College,
Shivani, (M.P.)

www.rjournals.co.in

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Half Yearly | **UGC Approved** | **ISSN : 2319 - 8648**

Issue IVol II, May. 2017 | **Sr. No. 64310** | **Impact Factor : 2.143**

18	Programmes And Strategies For Attaining Clean And Green India	DeelipkumarNamdevraoJadhav	67
19	Ancient Indian costume in the period of Mauryan and Sunga (321 – 72 B. C.)	Mrs. Rekha B. Lonikar	70
20	Twentieth-century English literature: An Overview	More J. G.	73
21	"Evaluative Study of contaminated soil and Bioremediation Treatment in Marathwada"	Dr. Sanjay Kale	76
22	A Crop Combination by Weavers and Thomas Method in Bhandgaon Village in IndapurTahsil	Dr.Dhanushwar R. S.	79
23	साहित्य और इतिहास भूषण के काव्य के विशेष सन्दर्भ में	संतोष साहेबराव नागरे	83
24	सामाजिकसरोकारिता को निबाहती राजन स्वामी की ग़ज़ल	डॉ. संजय सोपान रणखांबे	86
25	हिंदी ग़ज़लों में आतंकवाद की भयावहता	डॉ. बंग नरसिंगदास ओमप्रकाश	90
26	विषय : साहित्य समाज औरहिंदी सिनेमा : एक चिंतन	प्रा.डॉ.एम.ए.येल्लूरे	93
27	बौद्धदर्शन और असंगघोष कीकविता	डॉ.संजय जाधव , प्रा.डहाळे मुंजाभाऊ	96
28	'धारा ३७० : एक समीक्षात्मक अध्ययन'	साईनाथइस्तारीवाघमारे	101
29	कौटिल्याचे आर्थिक विचार	डॉ.गोंविद राजाराम परडे	105
30	"भारतातील सुफी चळवळ आणि सामाजिक ऐक्य"	डॉ. आर. एस. पारवे	107
31	गोलमाल व्यवस्था का दर्पण: थर्ड डिग्री	डॉ. प्रदीप सूर्यवंशी	111

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Half Yearly
Issue IX Vol II , May 2017

UGC Approved
Sr. No. 64310

ISSN : 2319 - 8648
Impact Factor : 2.143

गोलमाल व्यवस्था का दर्पण: थर्ड डिग्री

डॉ. प्रदीप सूर्यवंशी
हिंदी विभागाध्यक्ष एवं शोध-निर्देशक,दयानंद कला महाविद्यालय, लातुर (महाराष्ट्र)

----------(31)----------

सुंदर वस्तु के पीछे दर्दनाक, करूण सत्य छिपा होता है। जो चीज ऊपर से सुंदर दिखती हैं वह अंदर से सुंदरहो यह निश्चत रूप से कह नही सकते। हमारी सभ्यता, संस्कार, स्वतंत्रता पूरे विश्व में आदर्श हैं तथा विश्व का सबसे बड़ा गणतंत्र देश, यह रूतबा भी। यह रूतबा ऊपरी सतह का है। इसकी गहराई को देखने के बाद यह गरिमा टूटकर बिखर जाती है और समाने आता है बहुत ही दर्दनाक, करूण तथा दिल दहलाने वाला सत्य। जिससें आम जनता अनजान है ही साथ में असुरक्षित भी। जिस व्यवस्था पर उसे नाज है वह व्यवस्था कागजी और ऊपर से रक्षा का विश्वास देकर उसे परिश्रम के लिए दौड़ाती है। मेहनत से कमाई हुई संपत्ती को व्यवस्था पर्दे के पीछे से अप्रत्यक्ष रूप से लुटती है। लुटी गई संपत्ती को वापस दिलाने का झूठा विश्वास देती है। अगर वह संपत्ती पाने के हद से गुजर जाता है या व्यवस्था की खोखली जड़ तक पहुँचने का प्रयास करता है, तो उसे दूसरों के द्वारा आंतकित, डराया और धमकाया जाता है। उसे वही छोड़ देते हैं जहाँ से उसने शुरूआत की थी। सच कहूँ तो दुनिया गोल है और हमारी व्यवस्था गोलमाल है। यह व्यवस्था भले ही सुंदर और लोकतंत्र की हो पर सच्चाई यह है कि आम जनता और युवकों के मेहनत तथा परिश्रम पर चलती है। इसका वास्तविक और यथार्थ चित्रण समकालीन कथाकार उदय प्रकाश जी ने अपनी कहानी 'थर्ड डिग्री' के माध्यम से उजागर किया है। व्यवस्था और उसका ढाँचा ऊपर से बहुत सुंदर दिखाई देता है पर भ्रष्टाचार, पुलिस, प्रशासन और चोरों की साँठ-गाँठ ने धुनकर अंदर-ही अंदर से उसे खोखला बना दिया है।

उदय प्रकाश 'थर्ड डिग्री' कहानी के माध्यम से भारतीय व्यवस्था के खोखलेपन की यथार्थता को सहज और सरल रूप में प्रस्तुत किया हैं। इस कहानी का नायक सुरेश है जो आम जनता का प्रतिनिधित्व करता है। उसी मेहनत और परिश्रम को चोर-पुलिस और व्यवस्था रक्षक बनकर लूटती है और उसे झूठे विश्वास पर दौड़ा-दौड़ाकर वही छोड़ देती है। जहाँ से उसने शुरूआत की थी।

सुरेश का छोटा-सा परिवार है। परिवार में माँ और पत्नी सदस्य है। आर्थिक व्यवस्था के लिए एक बैंक से कर्जा लेकर ट्रॅक खरीदता है। वह ईमानदारी और परिश्रम से अपना व्यवसाय करता है। इससे उसे प्रति माह तीन हजार रूपए मिलते हैं। उसमें वह माँ की दवा-दारू, मकान का किराया, ट्रॅक की रिपयेरी, टायर और डिझेल आदि से प्रति माह दो-ढ़ाई हजार की आमदनी कमाता है। उससे वह अपने परिवार की जरूरतें पूरी करता है। घर में कोई कमी नहीं थी। खुशहाल परिवार था।

सुरेश की पत्नी का प्रसवकाल जैसे ही नजदीक आता है तो मायकेवाले उसे रायपुर बुला लेते है और नजदीकी अस्पताल में उसका दाखला कराते हैं। 15 फरवरी को सुरेश के साले साहब सुधींद्र का टेलीग्राम आता है- 'फौरन अस्पताल आ जाइए। सब ठीक है।' टेलीग्राम पाते ही सुरेश उसी रात्र अगली दिन की सुबह की ट्रेन का माँ और उसका रिझर्वेशन करवाता है। सुबह जल्दी उठकर दोनों तैयार होते हैं और मकान को ताला लगाकर चैराह तक चल रहते थे कि अचानक एक रिक्शा उनके समीप आकर खड़ी रहती है। रिक्शावाले को देखकर सुरेश के होश उड़ जाते हैं क्योंकि वह रिक्शावाला और कोई नहीं इस शहर का नामी चोर फकीरा है। उसी समय से उसके मन में चिंता का बवंडर शुरू होता है।

सुरेश रायपुर चला जाता है पर उसका सारा ध्यान अपने घर पर ही रहता है। फकीरा उसके घर का सामान चुरा न ले इसलिए वह पहली बार मंदिर जाकर भगवान को नारियल चढ़ाता है। रायपुर में पत्नी और बेटे की खुशहाली देखकर जब वह अपने घर लौटकर आते ही देखता है कि फकीरा ने

सुरेश थोड़ी लगन, थोड़ी मेहनत और जरासी बुद्धि के इस्तेमाल करता है, नतीजन हरप्रीत पिछले दरवाजे से उसके कमरे में आती है। दो-ढ़ाई घंटे के प्यार और चूमाचाटी के बाद हरप्रीत चोरी के सामान तथा पुलिस की हकीकत बयान करती है। वह कहती है कि गोपाल ने पुलिस को सोने के गहने और दूसरे सामान का अता-पता दिया था। लेकिन दिक्कत यह थी कि सामान ऊँची जगह पर बेच दिया गया था।

हरप्रीत से पता चलता है कि फकीरा ने चोरी का माल सी.एम.ओ. (चीफ म्युनिसिपल ऑफिसर) श्री मनोहरलाल गुप्ता की पत्नी को कम दाम में बेचा था। मनोहरलाल गुप्ता विधि एवं राजस्व मंत्री लखौरीराम अग्रवाल के बहनोई है जब यह बात पुलिस को पता चलती है तो पांडे घबरा जाता है। एस.एच.पांडे सी.एम.ओ. साहब से चोरी तथा चोरी के गहनों की बात करते हुए उस घटना को दबाता है और खुद का तीन साल से रूका हुआ प्रमोशन उसके बदले में करवा लेता है। अमरीक म्युनिसिपैलिटी का अटका हुआ ठेका अपने नाम करवा लेता है।

यह सब सुनकर सुरेश अवाक् रहता है। जो पुलिस आम जनता की रक्षा के लिए होती है। वह आज आम जनता की लुटी हुई वस्तुओं को बेचने के लिए दलाल बनी हुई है। जिन्हें जनता के सेवक के रूप में नौकरी दी गई वह जनता की खून-पसीनें से कमाई वस्तुओं को कम किमंत में खरीदते हैं और अपने अधिकारों से उन वारदात को कुचलते हैं। चोर-पुलिस-व्यवस्था हाथों में हाथ डालकर जनता को खुले आम लुट रहे हैं। लोगों की ईमानदारी और मेहनत पर डाका डालना उनका पेशा है। वह जनता के सेवक या रक्षक नहीं है उनके भेष में छिपे हुए वैशी दरिदे है जो ईमानदारी, आत्मीयता, प्रेम, दोस्ती, अपनापन आदि को रोंदकर सिर्फ अपना पेट भरते हैं। विवशता यह है कि दिनों-दिन इनका पेट और भूख बढ़ती जा रही है।

निष्कर्ष:-

प्रस्तुत कहानी चोर-पुलिस-व्यवस्था की साँठ-गाँठ को उजागर करती है। इसमें हमें 'रक्षक ही भक्षक' बने नजर आते हैं। पुलिस और व्यवस्था लोगों को कैसे बेवखूफ बनाती हैं इसका यथार्थ चित्रण इसमें किया गया है। चोर और पुलिस की साँठ-गाँठ होती है इसके कई उदाहरण पुलिस के साथ घुमते हुए सुरेश को देखने को मिलते हैं। व्यवस्था की बर्बरता जो आधुनिक युग में उग्र रूप धारण कर रही है इसका वास्तविक चित्रण उदय प्रकाश जी ने इसमें किया हुआ दृष्टिगोचर होता है। आजकल इसके कई उदाहरण समाचार पत्रों में छपे हुए, न्यूज चैनेलों में प्रत्यक्ष प्रतिदिन दिखाई देते हैं। इस भ्रष्ट व्यवस्था के प्रतिदिन कई लोग शिकार होते हुए दिखाई दे रहे हैं। यह व्यवस्था जनता को लुटती हैं, लुटे हुए सामान को बेचती भी है और जिसका सामान लूटा है उसे प्रत्यक्ष रूप से डराती भी है, धमकाती भी है तथा उसे बेबस एवं लाचार कर अकेला छोड़ देती है। अंत में कह सकते हैं कि ''व्यवस्था आम लोगों तथा युवकों को लुटने का करती है धंधा, लोगों के मेहनत और परिश्रम पर जलाती हैं अपने घर का चूल्हा।''

संदर्भ:-

1. थर्ड डिग्री - उदय प्रकाश पृष्ठ 92
2. थर्ड डिग्री - उदय प्रकाश पृष्ठ 93-94
3. थर्ड डिग्री - उदय प्रकाश पृष्ठ 98